मैथिलीक प्रतिनिधि गजल

1905सँ 2017 धरि

संकलन ओ संपादन

गजेन्द्र ठाकुर

आशीष अनचिन्हार

प्रस्तुत शाइर सभहुँक नाम---

1905सँ लऽ कऽ 1930 धरि-

पं.जीवन झा

यदुनाथ झा यदुवर

1931सँ लऽ कऽ 1970 धरि-

कविवर सीताराम झा

काशीकान्त मिश्र मधुप

1971सँ लऽकऽ 2008 धरि-

जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"

योगानंद हीरा

विजयनाथ झा

2008सँ लऽकऽ 2017 धरि-

(वर्णवृत वा अरबी बहर खण्ड)

श्रीमती शांतिलक्ष्मी चौधरी

ओमप्रकाश

राजीवरञ्जन मिश्र

अमित मिश्र

पंकज चौधरी "नवलश्री"

जगदानंद झा "मनु"

कुंदन कुमार कर्ण

राम कुमार मिश्र

प्रदीप पुष्प

नीरज कर्ण

(सरल वर्णिक बहर खण्ड)

श्रीमती इरा मल्लिक

स्वाती लाल

मुन्नाजी

प्रभात राय भट्ट

उमेश मंडल

विनीत उत्पल

अनिल मल्लिक

ऐ संकलनकेँ पढ़बासँ पहिने----

मोटा-मोटी 1905सँ लऽ कऽ 1930 धरि मैथिली गजलक नामपर जे वस्तु देखबामे अबैए ताहि महँक अधिकांश गजलमे वस्तुतः 70-80% वर्णवृत अछि। मुदा हमरा सभकेँ ईहो धेआन रखबाक चाही जे कोनो काजक शुरूआतमे गलती होइते छै तँए जँ पं.जीवन झा, यदुवरजी, आनंद झा न्यायाचार्य प्रभृति गजलकारक गजलमे जँ 70-80% वर्णवृत छन्हि तँ आशचर्य नै (ऐठाम ई कहब कोनो बेजाए नै जे पं.जीवन झा, यदुवरजी, आनंद झा न्यायाचार्य प्रभृति गजलकारक गजलसँ बेकार आ बिना वर्णवृत बला गजल एखनो लिखा रहल अछि)। मुदा शुरूआती गलतीकेँ दुरुस्त करैत कविवर सीताराम झा ओ काशीकान्त मिश्र (मधुप) जी गजलमे एला। हमरा सभ लग कविवर जीक कुल 3टा आ मधुप जीक 1टा गजल अछि मुदा ऐ दूटा गजलकारक चारिटा गजल ई कहबामे सक्षम अछि जे गजल एहने हेबाक चाही। प्रस्तुत प्रतिनिधि गजल संग्रहमे 1969 धरिक गजल सन गजलकेँ सेहो लेल गेल अछि कारण टेढ़ भेलाक बादो ई खाम्हक काज कऽ रहल अछि। हँ, 1970सँ लऽ कऽ एखन धरिक गजल सन बला वस्तुकेँ हम सभ वहिष्कार केलहुँ अछि कारण हिनकर सभहँक दायित्व छलनि गजलकेँ सम्हरबाक मुदा ई सभ महान क्रांतिकारीक चोला पहीरि गजलक कोड़ो-बाती सभकेँ उजाड़ि देलनि। हिनका सभकेँ गजलक चिन्ता नै छलनि, बस खाली साहित्य अकादेमी पुरस्कारक भाँजमे ई सभ लगैत रहलाह। 1930सँ 1970 धरि टुक-टाक गजल लिखाइत रहल। जे की कविवर ओ मधुपजी द्वारा लिखल गेल। 1970सँ लऽकऽ 2008 धरि किछुए गजलकार सभ भेलाह जे बहर ओ व्याकरणमे लिखलाह यथा योगानंद हीरा, विजयनाथ झा, जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल, आदि। गजल आलोचनामे डा. रामदेव झा जीक लेख (रचना- जून 1984) ओहि समयक हिसाबें ठीक-ठाक गजल आलोचनामे गनती लायक अछि मुदा रामदेव जी सेहो किछु एहन गजलकारक नाम सभ गना देलथि जे की गजलकार छथिए नै जेना-सरस,रमेश,वियोगी, आदि-आदि ओना रामदेव जी सेहो हिनकर सभहँक गजलकेँ गजल मानऽसँ हिचकिचाइत छथि । ऐ संग्रहक रचनाकेँ हम दू तरीकासँ प्रस्तुत केलहुँ अछि-पहिल तरीकामे हम चारि काल खंड बनेलहुँ

1905सँ लऽकऽ 1930 धरि, 1931सँ लऽकऽ 1970 धरि,1971सँ लऽकऽ 2008 धरि आ 2008सँ लऽकऽ एखन धरि। आ दोसर तरीकामे हरेक काल-खंडमे हरेक गजलकारक हिसाबें गजल देलहुँ। ओना ई चारि कालखंड दू युगमे विभाजित कएल गेल अछि- जीवन युग(1905सँ 2008 धरि) आ अनचिन्हार युग (2008सँ वर्तमान धरि)। हमरा सभ ऐ संकलनमे ऐ दू युगक अधारपर रचना सेहो दऽ सकै छलहुँ मुदा ई चारि कालखंड बला युक्ति गजलक विकासकेँ खंड-खंड कऽ देखा रहल अछि।
चूँकि गजल वर्णवृतपर अधारित रहै छै मने हरेक पाँतिक मात्राक्रम एक समान रहबाक चाही। बहुते गोटा एक समान मात्राक्रमकेँ "एक समान मात्रा" बूझि लै छथि जे की गलत अछि। फेर दोहराबी जे गजलक हरेक पाँतिक मात्राक्रम एक समान हेबाक चाही। मात्रा गनबाक लेल आ मात्राक नियम शैथिल्य लेल "अनचिन्हार आखर" (ब्लाग http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/), "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास" एवं अन्य गजल व्याकरणक ग्रंथ सभ देखल जा सकैए।

ऐ संकलनक गजल सभहँक मात्रा निर्धारित करबा कालमे किछु गप्पकेँ धेआनमे राखी—

1) मैथिलीमे पहिने चंद्रबिंदुयुक्त लघुकेँ सेहो दीर्घ मानल जाइत छलै (देखू पं. दीनबंधु झा रचित मिथिला भाषा विद्योतन) मुदा ई गलत अछि।
2) पहिने एकै शब्दक संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक अक्षरकेँ दीर्घ मानल जाइत छलै (हमहूँ सभ बहुत दिन धरि इएह मानै छलहुँ, मुदा नवीन शोध सभक अधार पर एकर सभहँक खंडन-मंडन भऽ चुकल अछि जे की मैथिली गजलक एकमात्र प्रमाणिक पत्रिका (ब्लागरूपमे) www.anchinharakharkolkata.blogspot.com पर उपल्बध अछि)। आब दू टा अलग-अलग शब्द रहितों संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक बला अक्षरकेँ दीर्घ मानि रहल छी हम सभ। ऐ खंडन-मंडनकेँ "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास" नामक पोथीमे सेहो देखल जा सकैए।
3) प्राचीन गजलकार सभ केखनो काल कऽ छंद निर्वाह लेल दीर्घकेँ लघु मानि लेने छथि। लघुकेँ दीर्घ मानब वा दीर्घकेँ लघु मानबाक प्रक्रियाकेँ छांदस कहल जाइत छै। ओना ई मानऽ बला चक्कर प्राचीन गजलकार सभ बहुत कम्मे लेने छथि तँए एकरा स्वतंत्रता बुझू, स्वछंदता नै।
4) सरल वार्णिक बहरक प्रयोग 2008क बाद भेल अछि तँए एकरा अलगसँ देखाओल गेल अछि मने ऐ बहरक प्रयोग केनिहार सभ महत्वपूर्ण गजलकारकेँ अलगसँ एकठाम राखल गेल अछि। ई जानल तथ्य अछि जे सरल वार्णिक बहर गजलक बहर नै थिक। मुदा हमरा सभकेँ ई मानबामे कोनो दिक्कत नै जे जँ सरल वार्णिक बहर नै रहितै तँ आधुनिक गजलमे वर्णवृत दिस धेआन केकरो नै जैतै। तँए सरल वार्णिक बहरकेँ आधुनिक मैथिली गजलक नेओं मानल जाए तँ कोनो बेजाए नै आ ऐ नेओंकेँ मोन पाड़ैत सरल

वार्णिक गजलकेँ सेहो स्थान देल गेल अछि सेहो ऐ विश्वासक संग जे सरल वार्णिक बहरक प्रयोग केनिहार आब वर्णवृत लेल सेहो प्रयास करताह।

4) जीवनमे जतबे सुख जरूरी छै ततबे दुख । तँए ऐ संकलनमे प्रेम, सुख आ सर्वहारा वर्गक चिन्ता तीनू भेटत। हम सभ ऐ संकलनकेँ जनवादी, साम्यवादी, मार्क्सवादी,प्रगतिशील आदि शब्दसँ विभूषित नै करऽ चाहै छी।

5) सभसँ महत्वपूर्ण गप्प। 1905सँ 1970 धरिक बहुत रास गजल आन-आन संपादक महोदय केर संपादन रूपमे प्राप्त भेल अछि। तँए बहुत संभव जे ई संपादक सभ अपना हिसाबें वर्तनी राखि देने होथि। आ प्राचीन गजलक मूल वर्तनी विलुप्त भऽ गेल हो। उदाहरण लेल देखू--मिथिला गीतांजलि जे की 1923मे यदुनाथ झा यदुवरजीक संपादनमे प्रकाशित भेल तैमे स्यवं यदुवर जी अपन एकटा गजलक शुरूआत एना केने छथि--"भगवान हमर ई मिथिला..." मुदा डा. रामदेव झा जी अपन लेख " मैथिलीमे गजल" जे की रचना पत्रिकाक जून 1984 अंकमे छपल तैमे एही गजलकेँ एना देने छथि-"भगवन् हमर ई मिथिला..." आब पाठक अपने अंदाजा लगा सकै छथि जे की हाल छै। हम बस ऐठाम मात्र हिंट देलहुँ अछि। एही प्रसंगमे एकटा आर रोचक उदाहरण देखू, श्री चंद्रनाथ मिश्र अमर एवं रामदेव झाजी द्वारा संपादित कविवर जीवन झा रचनावलीमे जीवन झा जीक एकटा गजलकेँ संपादक एना प्रस्तुत केने छथि (तेसर संस्करण-1989 मैथिली अकादेमी, पटना)—

एको कथा ने हमर अहाँ कान करै छी
हम पैर पड़ै छी तँ अहाँ मान करै छी

बाजी तँ हम बताहि कहाबी दियोग मे
चुपचाप ताहि लेल तोहर ध्यान धरै छी

ठीक इएह गजलकेँ तारानंद वियोगी जीक लेख "मैथिली गजल:मूल्यांकनक दिशा" जे की सियाराम झा सरस जीक संपादनमे निकलल " लोकवेद आ लालकिला" नामक संकलनमे अछि से देखू---

एको कथा ने हमर अहाँ कान करै छी
हम पैर पड़ै छी तँ अहाँ मान करै छी

बाजी हम बताहि कहाबी वियोग मे
चुपचाप ताहि लेल तोहर ध्यान करै छी

ऐ उदाहरण सभकेँ गौरसँ देखू सभ गप्प फड़िच्छा जाएत। बहुत सम्भव जे पं. जीवन झा रचनावली आ आन कोनो प्राचीन गजलकारक पोथी जे की संपादनक माध्यमसँ आएल हो तैमहँक गजलक मूल वर्तनी सभमे एहने दिक्कत कएल गेल हो। ओना ई हमर मात्र संभावने टा अछि। निश्चित रूपसँ हम सभ आन गजलक आन नव शोधार्थी (जे की बिना पाइ देने शोधमे रूचि रखैत होथि) ई अपेक्षा करै छी जे ओ प्राचीन गजलक मूल पाठकेँ सामने अनताह। हमरा लग जे सामग्री अछि से बहुत संभव संक्रमित हो तँए हम ओइ गजलक निच्चा ओकर स्रोत ओ अन्य जानकारी देने छी। आ तँए बहुत संभव जे प्राचीन गजल सभमे वर्णवृत ढ़ाँचा बिगड़ि गेल हो। तेनाहिते पं. जीवन झा जीक सभ गजल मैथिली अकादेमी, पटनासँ प्रकाशित हुनक रचनावलीपर अधारित अछि। यदुवरजीक सभ गजल "यदुवर रचनावली"(संपादक रमानंद झा रमण)पर अधारित अछि। यदुवर रचनावलीकेँ गौरसँ देखलापर पता चलैए जे यदुवर जी भारतीय शास्त्रीय संगीत ओ लोकगीत दूनू अधारपर अपन रचना केलनि आ संभवतः वएह अधार ओ गजल लेल सेहो लेलनि जे की गलत अछि। यदुवर रचनावलीमे दूटा गजलक अतिरिक्त एकटा कव्वाली (कौवाली) सेहो अछि।एही सभ दिक्कतकेँ देखैत "अनचिन्हार आखर" केर टीम एकटा अपील बहार केने रहए प्रिंट पत्रिकाक संपादक आ गजलकार सभसँ जकरा http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/ पर देखल जा सकैए। पं जीवन झा जीक सभ गजलक तक्ती भेल अछि जकरा "मैथिली गजलक व्याकरणक इतिहास" नामक ग्रंथ आ http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/ दूनू ठाम देखल जा सकैए।

6) ऐ संकलनकेँ प्रस्तुत करैत हमरा सभ लग कोनो दावा नै अछि आ सभ किछु निर्भर करत से भविष्यपर। भऽ सकैए जे भविष्य ऐ महँक गजलकेँ खारिज कऽ दै। ईहो संभव जे 2008क बाद बलामेसँ किछु गजलकार वा हमहीं सभ खारिज भऽ जाइ। कारण गजल अपना आपमे प्रगतिशील विधा अछि आ जे गजल संग रहियो कऽ प्रवाहमे नै आएत तँ गजल ओकरा खारिज कऽ देतै चाहे ओ हम सभ रही की अहाँ सभ। एहि पोथीमे सभ बहर बला गजल देल गेल अछि मुदा संभव जे ओकर गजलकार किछु कारणसँ बिना बहरक गजल लिखने होथि अथवा लिखता। मुदा हमरा बहरसँ मतलब अछि गजलकारसँ नै। गजलकार लग बहुतो समस्या भऽ सकै छनि। किनको पुरस्कार चाही तँ किनको लिस्टमे नाम आ ताहि लेल बिना बहरक गजल सेहो लीखि सकै छथि आ हमरा ताहिसँ दिक्कत नै अछि। सभहक एकटा समय होइत अछि आ हेबाको चाही।

7) हम सभ कहियो ई नै चाहलहुँ जे गजल ऐ समय (1905सँ 2017 धरि) पर एकैटा प्रतिनिधि संकलन होइ। हम सभ तँ चाहै छी जे 100 नै 1000 प्रतिनिधि गजल संकलन ऐ कालखंडपर आबै जैसँ पाठकोकेँ संपादकक विवेक आ आन छूटल गजलकारक गजल पता चलतन्हि।

8) ऐ संकलनमे वर्णवृत अधारित गजलपर जोर छै आ प्रस्तुत संकलन एकेडमिक नै छै तइयो बहुत संभव जे आर आन वर्णवृत अधारित गजल छूटि गेल हएत खास कऽ केदार नाथ लाभ आदिक रचना वा पोथी

नै उपल्बध रहबाक कारणें ई समस्या आएल अछि आ ऐ तरहँक सभ गलतीकेँ हम सभ अपना माथापर लै छी। किछु प्रारांभिक गजल सहो ऐ संकलनमे नै प्रस्तुत भेल अछि जे की हमरा लोकनिक अलसपनक परिणाम अछि।

9) ऐ संकलनकेँ तैयार करबामे हम सभ कोनो पारम्परिक तरीकाक अनुसरण नै केलहुँ अछि तँए अहाँ सभकेँ वयसमे छोट गजलकार पहिनेहों भेटि सकै छथि वा पहिने प्रकाशित रचना बादमे सेहो भेटि सकैए। ऐ संकलनक कोनो रचनाक गुणवत्तापर हमर सभहँक कोनो टिप्पणी नै रहत कारण ओ अधिकार पाठकक छै। ईहो कहब बेजाए नै जे किछु पुरान गजलकार गजलक व्याकरणकेँ उदारतापूर्वक पालन कऽ रहल छथि तैमे जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल आगू छथि।

10) केखनो काल प्रचलित नियमक उल्लंघन सेहो भेटैत अछि खास कऽ विजय नाथ झा जीक गजल सभमे जतए शब्दक शुरू बला दीर्घकेँ सेहो लघु मानि लेल गेल छै। मुदा हमर स्पष्ट मानब अछि जे ऐ गलतीकेँ बाबजूदो विजयनाथ जी आन स्वच्छंदतावादी गजलकारसँ बेसी नीक छथि। आ तेहन समयमे ओ नियमक पालन केलथि जखन की सभ व्याकरणहीन गजलकार सभ अपन पताका अपने थम्हने छलाह। विजयनाथ जीक गजलक शिल्प कविवर सीताराम झा युगीन। मुदा ऐ लेल व्याकरणशास्त्री सभ बेसी दोषी छथि। विजयनाथजी अपना भरिसक व्याकरणक पूरा-पूरी पालन केने छथि।

11) प्रस्तुत पोथीमे जँ कोनो तथ्यगत दोष अछि तकर जिम्मेदारी हमरा सभहँक उपर अछि। पाठक सभ आग्रह जे ओ एकरा देखाबथि जैसँ भविष्यमे सुधार भऽ सकए।

12) प्रस्तुत संकलनमे बाल गजल ओ भक्ति गजलक प्रधानता नै अछि। कारण ई दूनू आब अपन अस्तित्व बना लेने अछि आ दूनू लेल अलग-अलग संकलन बनेबाक जरूरति छै।

13) संपादकक अधिकारक रक्षा करैत किछु गजलकेँ सम्पादित कएल गेल अछि (मात्र 1970सँ लऽकऽ एखन धरिक, तैसँ पहिनुक जे जेना भेटल तेनाहिते अछि)

14) किछु नव गजलकार सभकेँ रोयाल्टी लेबाक इच्छा छलनि आ हमरा लोकनि देबामे असमर्थ। अंततः हुनकर सभहँक गजलकेँ हटा कऽ ऐ समस्याक निवारण केलहुँ।

15) हम सभ ई मानै छी जे सुधांशु शेखर चौधरी आ बाबा बैद्यनाथ ई दूनू गजलकार अपना समयक आन गजलकारक अपेक्षा बेसी बोधगर छला आ बिना हो-हल्लाक रचनारत छलथि। मुदा नियम तँ नियम छै तँए हुनको दूनूक रचना ऐमे नै अछि।

16) ऐ पोथीमे बहुत रास तथ्य आशीष अनचिन्हार कृत "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास"सँ लेल गेल अछि।

17) नैतिक रूपसँ संपादक अपन संपादित पोथीमे अपन रचना नै लगाबथि मुदा एहन परिपाटी मैथिलीमे नै अछि। अपना ओइठाम तँ सभसँ पहिने पोथीमे संपादके महोदयक रचना भेटत। हमरा लोकनि किछु ढिलाइ केर संग अइ नैतिकताक पालन करै छी। ढिलाइ मतलब जे वैचारिक रचना बला

संपादित पोथी (जेना आलोचना, लेख आदि बला)मे संपादक अपनो रचना देथि कारण एहन विधामे कम लोक सक्रिय छथि मुदा साहित्यिक रचना (जेना कविता-कथा-गजल आदि बला)मे संपादक अपन रचना नै देथि कारण अइ विधा सभमे बेसी लोक सक्रिय छथि आ नीक-नीक रचनाक अभाव नै छै। बाल गजल, भक्ति गजल आ कि एहन विधा जाइमे कम लोक छथि तइमे संपादक अपनो देथि तँ हर्ज नै। प्रस्तुत संकलनमे हम सभ अइ नियमक नैतिक रूपसँ पालन केलहुँ अछि।

18) ऐ पोथीमे भाषाक पूर्ण ओ अपूर्ण दूनू रूप प्रयोग भेल अछि। ऐ, अइ, एहि तीनू रूप भेटत आ आन शब्द लेल तेहने सन बूझू। गम्भीर पाठक सभकैं मानक वर्तनी गड़बड़ बुझेतनि। मुदा हमरा जनैत गजल लेल अपूर्ण भाषा सभसँ बेसी उपयुक्त। आ ई पाठक, शाइरपर छोड़ल जाइए जे ओ अपनेसँ परीक्षण करथि जे कोन रूपक भाषासँ गजलमे तेजी आबि रहल छै। शुरूआती दौरमे हमरा लोकनि एक अक्षरीय "ई" बदलामे "इ" लिखैत रही आ बहुत रास गजलमे "इ" आएल अछि। आब जँ वर्तनी सही करबै तँ मात्राक्रम गड़बड़ भऽ जेतै। आबक गजलमे एहन गड़बड़ी नै अछि। अइ पोथीक सभ अक्षर-संयोजन भिन्न-भिन्न कंप्यूटरपर भेल अछि। आ फोंटक विभिन्नताक कारणें कतहुँ-कतहुँ संयुक्ताक्षर मूल रूपमे भेटत।

जँ हमरा लोकनि प्राचीन गजलक संदर्भ निष्कर्ष रूपमे देखी तँ किछु तथ्य एना हएत---

अ) मैथिलीक अधिकांश प्रारंभिक गजल आन-आन संपादकक संपादनमे प्रकाशित अछि। जँ एकर अवलोकन करी तँ किछु शेरमे बहर भेटैत अछि आ किछुमे नै। ओना विभिन्न संपादकक संपादनमे वर्तनी भिन्नता अछि जै कारणे ऐ प्रारंभिक गजलपर कोनो ठोस निर्णय नै देल जा सकैए।

आ) 1930सँ 1970 धरिक गजलमे व्याकरणक पूरा पालन भेल अछि। मुदा तै समयक व्याकरणक किछु तथ्य (जेना चंद्रबिंदु, संयुक्ताक्षर ओ छांदस) गलत छल जै कारणे ओ गजल सभ आजुक समयमे गलत बुझना जा रहल अछि मुदा ई गजलकारक दोष नै व्याकरणशास्त्री सभहँक दोष छलनि। 1971सँ 2008 धरि अधिकांश गजल सेहो एनहे सन अछि। मने 1930सँ 2008 धरिक गजलमे एकै रंगक दोष जेना चंद्रबिंदु, संयुक्ताक्षर ओ छांदस बला अछि आ हमरा लोकनि ऐ लेल व्याकरणशास्त्री सभकैं दोषी मानै छी।

इ) 2008सँ एखन धरि लघु-दीर्घ प्रसंगमे बहुत खंडन-मंडन भेल आ मानक रूप स्थिर भेल। आ सभ गजलकार एकर पालन कऽ रहल छथि।

1905सँ लऽ कऽ 1930 धरि

जीवन झा

1

निसास लै नोर जौं बहाबी समुद्र पर्यन्त तौं थहाबी
अशेष संसार काँ दहाबी सुरेश प्रासाद वा ढ़हाबी

महा कुलाचार छाड़ि गेहे विशेष अहाँक टा सिनेहे
अरन्यमे बैसि दीन देहे कहु तितिक्षा कतै सहाबी

अनंङ्ग सन्ताप सौं जरै छी अहाँक चिन्ता जतै करै छी
सखीक लाजे ततै मरै छी जतै कही वा जतै कहाबी

विलोचनोदार वारि धारा दिवा निशांमे अनेक वारा
वियोग तापापनोदपारा उरोज गौरीश काँ नहाबी

कथूक चिन्ता ने चित्त आनी अशुद्ध मानी तँ फेरि छानी
जतेक काले विशुद्ध जानी जतेक डाही जतै डहाबी

पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम 12+122+12+122+12+122+12+122 अछि, शेरक दोसर पाँतिक 12+122+12+122+12+122+12+122 मात्रक्रम अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम 12+122+12+122+12+112+12+122 मने मतलाक हिसाबें नै अछि, दोसर शेरक दोसर

पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें भऽ सकैए बशर्ते की जँ "कहु" केर बदला "कहू" लेबै। ओना ई हमरा जनैत संपादकीय गलती अछि। हम ऐके बाद "कहू" लेब। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि, तेसर शेरक दोसर पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि, चारिम शेरक दोसर पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि। पाँचम शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि, पाँचम शेरक दोसर पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि। मने कुल मिला कऽ मात्र एक पाँतिमे एकटा गलती अछि।

2

अहाँ सों भेंट जहिआ भेल तेखन सों विकल हम छी
उठैत अन्धार होइए काज सब करबामे अक्षम छी

अहाँ काँ छाड़ि कै पृथ्वीमे दोसर हम ने देखै छी
कोना काढ़ू हम अपना मूँहसँ अहाँ सभसँ उत्तम छी

कथू लै फूसि नै बजब शपथ खा खा कहै हम छी
अहीं प्राणेश्वरी छी एकटा सर्वस्व प्रीतम छी

पिनाकी पूजि क्यो राजा होऔ गोविन्द क्यो पूजौ
सम्हारू वा विगाड़ू विश्वमे एकटा अहीं दम छी

पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम 1222+1222+1222+1222 अछि, शेरक दोसर पाँतिक मात्रक्रम 12122+1222+1222+1222 अछि। हमरा जनैत कविवरजी "उठैत"मे त वर्णकैँ हलंत मानने छथि जे की उचित नै मानल जा सकैए। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम 1222+1222+1222+1222 अछि, दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्रक्रम 1222+2222+11122+1222 अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम 1222+1212+1222+1222 अछि मुदा हमरा जनैत संपादक महोदय "बाजब" केर बदला "बजब" राखि देला जैसँ बहर गड़बड़ा गेल। हमरा हिसाबें बाजब सही छै आ तखन मतलाक हिसाबें सही हेतै आ तँए हम "बाजब" लऽ रहल छी।।तेसर शेरक दोसर पाँतिक मात्रक्रम मतलाक

हिसाबें अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि अछि, चारिम शेरक दोसर पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि।

3

पड़ैए बूझि किछु ने ध्यानमे हम भेल पागल छी
चलै छी ठाढ़ छी बैसल छी सूतल छी कि जागल छी

कहौ क्यो किच्छु कतबो हम कोनो एक ठाम बैसल छी
कतेको दूरि छौ तैओ अहाँ मनमे तँ पैसल छी

बुझा देमक त चाही कौखना अनजानकैँ कनिऐं
जे ई अपराध छौ तोहर किए हमरासँ रूसल छी

बड़ा सन्देहमे छी हम खुशी होइ छै परोसिनी कैं
करै छी जे हँसी सबसँऽ अहाँ अत्यन्त चञ्चल छी

कहै छी प्राण हमरा तँऽ निबाहू प्रीति जा जीबी
अहाँ निश्चिन्त छी तँए की अहाँ बिनु हम तँ बेकल छी

पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम 1222+1222+1222+1222 अछि, शेरक दोसर पाँतिक मात्रक्रम 1222+1222+1222+1222 अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि, दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि, तेसर शेरक दोसर पाँतिक मात्रक्रम मतलाक हिसाबें अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्रक्रम 1222+1222+12212+12122 अछि। चारिम शेरक दोसर पाँतिक मात्रक्रम

मतलाक हिसाबें अछि। पाँचम शेरक दूनू पाँति मतलाक बराबर अछि। संगे-संग ईहो कहब उचित जे मतलाक हिसाबें काफिया "आगल" अछि जकर पालन आन शेर सभमे उचित रूपें नै भऽ सकल अछि।

यदुनाथ झा "यदुवर"

1

भगवान हमर ई मिथिला सुख शान्तिमय नगर हो
सभ कीर्तिमे अमर हो सद्‌गुण सदैव उर हो

मनमोहिनी प्रकृतिसँ युक्त रहय सदा ई
मंगलमयी सुजनकाँ अलौकिक प्रेम उर हो

सीता सरस्वती ओ लखिमा समानि घर घर
हो जन्म नारि मणि जे आदर्श भूमि पर हो

राजा विदेह सन हो न्यायी प्रजा हितैषी
नृपभक्त उद्यमी औ धर्मी प्रजा सुघर हो

जैमिनि कणाद कपिलादि वाल्मीकि सम
पुनि याज्ञवल्यक मुनि सन विप्र वर हो
घर घर वेदान्त ज्ञाता, हो अष्टावक्र सन सब
पुनि पिंगलाक सदृश, हरि भक्त नारि नर हो

मण्डन,महेश,उदयन,शंकर ओ पक्षधर सन
पुनि कालिदास सन सभ, कवि पण्डित प्रवर हो

मनबोध और विद्यापति, हर्षनाथ, चन्दा
सन मैथिलीक सेवक, कविवर अनेक नर हो

नारायणी ओ गंगा कमला ओ कोशि विमला
सन सर्वदा सुनिर्मल धारा प्रवाह धर हो

निज देश भक्त ज्ञानी सुउदार स्वार्थ त्यागी
नर रत्न हो ओ यदुवर गौरव सुबुद्धि कर हो

2
प्रेममयी रत्न खानि देश मुकुट जननी तों
भारत बिच श्रेष्ठ प्रान्त हमर जन्म धरनी तों

शत शत नैर रत्न सिंह, पण्डित प्रसवनी तों
दार्शनिक शास्त्रकार विज्ञ जनक जननी तों

सुजल सुफल शस्य शालिसौं सुस्वच्छ वरनी तों
विकशित बहुकुंज सुसुम सौं अतीव रमणी तों

धन्य धन्य मातु हमर मिथिले सुख सदनी तों
"यदुवर" जन कल्पलता देवि शत्रु शमनी तों

शाइरक मूल वर्तनी देल गेल अछि। हमरा हिसाबें नैर मने नर

1931सँ लऽ कऽ 1970 धरि

काशीकान्त मिश्र "मधुप"
1
मिथिलाक पूर्व गौरव नहि ध्यान टा धरै छी
सुनि मैथिली सुभाषा बिनु आगियें जड़ै छी

सूगो जहाँक दर्शन-सुनबैत छल तहीँ ठाँ
हा आइ "आइ गो" टा पढ़ि उच्चता करै छी

हम कालिदास विद्या-पति-नामछाड़ि मुँहमे
बाड़ीक तीत पटुआ सभ बंकिमे धरै छी

भाषा तथा विभूषा अछि ठीक अन्यदेशी
देशीक गेल ठेसी की पाँकमे पड़ै छी?

औ यत्र-तत्र देखू अछि पत्र सैकड़ो टा
अछि पत्र मैथिलीमे एको न तैं डरै छी
(2212-122-2212-122)
1932मे मैथिली साहित्य समिति, द्वारा काशीसँ "मैथिली-संदेश" नामक पत्रिकामे प्रकाशित

कविवर सीताराम झा
1
जगत मे थाकि जगदम्बे अहिंक पथ आबि बैसल छी
हमर क्यौ ने सुनैये हम सभक गुन गाबि बैसल छी

न कैलों धर्म सेवा वा न देवाराधने कौखन
कुटेबा में छलौं लागल तकर फल पाबि बैसल छी

दया स्वातीक घनमाला जकाँ अपनेक भूतल में
लगौने आस हम चातक जकां मुँह बाबि बैसल छी

कहू की अम्ब अपने सँ फुरैये बात ने किछुओ
अपन अपराध सँ चुपकी लगा जी दाबि बैसल छी

करै यदि दोष बालक तँ न हो मन रोख माता कैं
अहीं विश्वास कैँ केवल हृदय में लाबि बैसल छी

एकर बहर अछि-1222-1222-1222-1222 मने बहरे हजज
1928मे प्रकाशित कविवर सीताराम झा जीक "सूक्ति सुधा" (प्रथम बिंदु)मे संग्रहीत गजल जे की वस्तुतः " भक्ति गजल " अछि

2
हम की मनाउ चैती सतुआनि जूड़शीतल
भै गेल माघ मासहि धधकैत घूड़तीतल`

अछि देशमे दुपाटी कङरेस ओ किसानक
हम माँझमे पड़ल छी बनि कै बिलाड़ि तीतल

गाँधीक पक्ष ई जे सुख जौं चहैछ सब तों
राजा प्रजा परस्पर सब ठाम रहै रीतल

एक दिस सुभास बाबू ललकारि ई कहै छथि
कय देब हम बराबरि आकाश ओ महीतल

कर्तव्य की एतए ई हमरा अहाँ पुछी तौं
मिलि जाउ मालवीवत पाटी परीखि जीतल

सभ पाँतिमे 2212+ 122+2212+ 122 मात्राक्रम अछि। बीच-बीचमे "ए" के लघु मानल गेल अछि।

3

बाउजी जागू ठारर भरै छी कियै"
व्यर्थ सूतल कि बैसल सड़ै छी कियै"

वेद पोथी पढ़ू आ अखाढ़ा चढ़ू
बाट दू में ऐकोने धरै छी कियै"

जँ थिकहुँ विप्रवंशीय सत्पुत्र तँ
पाठशालाकनामे डरै छी कियै"

बाट में काँट कै काटि आगू बढ़ू
देखि रोड़ा कनेको अड़ै छी कियै"

मेल चाहय सदा शत्रुओं सँ सुधी
बन्धुऐ में अहाँ सब लड़ै छी कियै"

आधि में माँति छी छी खाधि में जा रहल
देखि आनक समुन्नति जरै छी कियै"

साध्य में बुद्धि नौका अछैतो अहाँ
विघ्न-बाधा नदी अहाँ ने तरै छी कियै"

मायबापोक सत्कर्म हो से करू
पापपन्थीक पाला पड़ै छी कियै"

बान्हि कक्षा स्वयं आत्मा रक्षा करू
शेष जीवन अछैतो मरै छी कियै"

ई गजल कविवर सीताराम झा काव्यावली-प्रथम भाग (संपादक, विश्वनाथ झा विषपायी)क पृष्ठ 108सँ लेल गेल अछि। प्रकाशन वर्ष-2008

सभ पाँतिमे 2122+ 122+ 122+ 12 मात्राक्रम अछि। ए, ऐ आदिकेँ लघु मानि ले गेल अछि। मतलामे रदीफ " छी किए" अछि तकर बादक शेर सभमे " छी कियै"। हमरा जनैत ई संपादकीय दोष हएत। आन शेर सभमे " छी कियै" केर बहुलता देखि मतलामे सेहो हम "छी कियै" लेलहुँ।
ऐ गजलक तेसर शेरक संदेशसँ व्यतिगत रूपें हम सभ सहमत नै छी कारण ई शेर संकुचित समाजक परिचायक अछि।

1971सँ लऽ कऽ 2008 धरि

जगदीश चन्द्र ठाकुर “अनिल”

गजल

1

टूटल छी तँइ गजल कहै छी
भूखल छी तँइ गजल कहै छी

ऑफिस सबहक कथा कहू की
लूटल छी तँइ गजल कहै छी

घरमे बैसल मगन रही सभ
गूगल छी तँइ गजल कहै छी

खापड़ि लारनि कते कनौलक
भूजल छी तँइ गजल कहै छी

उक्खड़ि केलक मदति समाठक
कूटल छी तँइ गजल कहै छी

बाबूजीकें कहाँ बुझलियनि
चूकल छी तँइ गजल कहै छी

पुरबा पछबा कते जगौलक
सूतल छी तँइ गजल कहै छी
मात्रा क्रम 2222 +12 + 122

2

सभ जनकें मतिमान बुझै छी
कण कणमे भगवान बुझै छी

संकटमे ऐ ठाम पहुँचलह
तोरे हम हनुमान बुझै छी

छै जकरा सम्पत्ति विवेकक
हम तकरे धनवान बुझै छी

दोसरकें अपमान करबकें
हम अपने अपमान बुझै छी

देलक जे सुख शान्ति धरा पर
हम तकरे गुणवान बुझै छी

हमरा ले उपहार धरणि ई
जीवनकें अभियान बुझै छी

मात्रा क्रम 222 + 221 + 122

3

हम नै ककरो बाट तकै छी
हम सूतै ले खाट तकै छी

बकरी संगे बाघ नहेतै
ओ निरमल हम घाट तकै छी

हमरा मॉलक बाट धरेलौं
हम गामक ओ हाट तकै छी

होटल नवका बिहुँसि रहल अछि
हम ओ टूटल टाट तकै छी

जे जीवनकें नीक बनेलक
हम ओ सुन्दर चाट तकै छी

मात्रा क्रम 2222+ 21 + 122

4

खेल सभटा उसरि जाइए
लोक सभटा बिसरि जाइए

गाछ कहियो मजरि जाइए
फेर कहियो झखड़ि जाइए

पाइ राखू अहाँ बैंकमे
पाइ हाथसँ ससरि जाइए

थालमे नित चलय दौड़ि ओ
माटिपर जे पिछड़ि जाइए

बाट कतबो कतौ नीक हो
बाट लोकक बिगड़ि जाइए

मूनि राखब कथी कोनठाँ
मूस सभटा कुतरि जाइए

लोक कतबो हुए जोरगर
अन्तमे सभ नचरि जाइए

मात्रा क्रम 2122+ 12 +212

5

दूभि और धान छी अहाँ
पान आ मखान छी अहाँ

दौड़ि दौड़ि थाकि गेल छी
दूर आसमान छी अहाँ

बेर बेर गाबि देखलौं
वेद आ कुरान छी अहाँ

काँट भरल छैक बाटपर
फूलके समान छी अहाँ

मोन केर प्रश्न अछि कते

एकटा निदान छी अहाँ
मात्रा क्रम 212121 + 212

6

जीवनके आशा बदलल
प्रेमक परिभाषा बदलल

बदलल समदाउन सोहर
अछि बारहमासा बदलल

किछुए दिन दिल्ली रहलै
छै आँखिक भाषा बदलल

पैकेजे मूलो बूझू
सबहक अभिलाषा बदलल

अंकल अंटी भरि दुनिया
मौसी आ मौसा बदलल

अपनामे सोचै छी हम
की बदलल की नै बदलल
मात्रा क्रम 2222222

7

कविता गीत गजल राखू
सदिखन मोन विमल राखू

चारू धाम रहत सटले
सदिखन नयन सजल राखू

शान्तिक धार बहय भीतर
बाहर चहल पहल राखू

आँखिक खेल बुझू सभटा
कानो अपन कुशल राखू

सत्यक लेल लड़ू सभदिन
जीवन अपन सुफल राखू
मात्रा क्रम 22 +2112 + 22

8

रातिकें राति कहब जरूरी छै
भोरकें भोर बनब जरूरी छै

जीत की लेब अहाँ सुनामीमे
मोनके संग लड़ब जरूरी छै

माथपर बोझ किए अनेरे ई
अपन बस ध्यान करब जरूरी छै

छोड़ि कय गाम नगर घुमै छी हम
गामके हाल बुझब जरूरी छै

प्राणमे गीत रहय भरल सदिखन

सत्यके संग चलब जरूरी छै
मात्रा क्रम 212 + 2112 + 1222

9

सदिखन शुभ चिन्तनमे छी
हम प्रेमक बन्धनमे छी

जीवन आ यौवनमे छी
कण कणमे जन जनमे छी

अमरितके खगता हमरा
तें सागर मन्थनमे छी

नै छी मन्दिर मसजिदमे
अन्नाके अनशनमे छी

छी चूड़ी आ कंगनमे
पुरहरमे अरिपनमे छी
मात्रा क्रम 2222222

10

नित्य उठै छी भोरे भोरे
घूमि अबै छी भोरे भोरे

नीक लगै छथि हरियर धरती

देखि अबै छी भोरे भोरे

आम लतामक गाछी देखी
गीत सुनै छी भोरे भोरे

पूज्य हमर छथि माँ आ बाबू
चरण छुबै छी भोरे भोरे

सभक खुशी ले तन मन जीवन
मनन करै छी भोरे भोरे
मात्रा क्रम 21 + 122 + 2222

योगानंद हीरा
1

देखू बौआ
आयल कौआ

छतपर बैसल
माँगय खोआ

कुचरय आनय
पाहुन कौआ

विरही पीड़ा
जानय कौआ

कानय बौआ
पकड़य कौआ

एके आँखिन
देखय कौआ

सभ पाँतिमे 2222 मात्राक्रम।

2
आइ की भेल अछि
माइ धी मेल अछि

भूत भागत कतय
गाछपर गेल अछि

दुख सुखक फिल्डमे
रमनगर खेल अछि

स्वारथक बागमे
ठेलमे ठेल अछि

शूल सन बात ई
संसदे जेल अछि

आब हीरा कहै
जौहरी खेल अछि

सभ पाँतिमे 2122+12 मात्राक्रम अछि।

3

रहू कमल सन सदा सुवासित
बनू मनोहर हवा सुवासित

उड़ै भमर चहुँ दिशा सुनाबै
हमर हुनक ई कथा सुवासित

दुखक झमारल हँसी लुटाबै
अलख जगाबै धरा सुवासित

किनक कने घोघ उठि रहल अछि
हवा करै अंगना सुवासित

चढ़ल गुलाबी निसा कमल सन
भरम हमर कंगना सुवासित

चलू बढ़ू सबजना निमंत्रण
बनी कुसुम हम मुदा सुवासित

सभ पाँतिमे 12+122+12+122मात्राक्रम अछि

4

हाथपर हाथ जोड़ल अहाँ
उलझले गाँठ खोलल अहाँ

काँट जे छल पड़ल बाटमे
फूल सगरो फुलायल अहाँ

बोल छल अनकठल काग सन
राग वीणाक टेरल अहाँ

पाग चमकल सभक माथपर
बाट मिथिलाक मोड़ल अहाँ

आब हीरा उगत खेतमे
आरि झगड़ाक तोड़ल अहाँ

सभ पाँतिमे 2122-122-12 मात्रा क्रम अछि।
अंतिका-अप्रैल-सितम्बर 2010मे प्रकाशित

5
हमरहुँ घरमे आयल पाहुन
घर आँगनमे छायल पाहुन

जिनकर खातिर आँखिक पुतरी
छल पथरायल आयल पाहुन

अँगना गमकल कंगना खनकल
घर आयल चोटायल पाहुन

मेना बाजल सुगना नाचल
दीदीकँ भरमायल पाहुन

कनखी मारै पोसा पिल्ला
देशी मुरगी खायल पाहुन

हीरा जे छल दुबकल घरमे
तरहथपर चमकायल पाहुन

सभ पाँतिमे आठटा दीर्घक प्रयोग अछि।

अंतिका-अप्रैल-सितम्बर 2010मे प्रकाशित

6

मोनमे अछि सवाल बाजू की
छल कपट केर हाल बाजू की

दुख सुखक गप्प आब सूनत के
सभ बजा रहल गाल बाजू की

छोट सन चीज कीनि ने पाबी
बाल बोधक सवाल बाजू की

माँग सभहँक तँ ओहिना बड़का
आँखि सभहँक बिड़ाल बाजू की

भाग लिखलक ललाट ई मँहगी
हाथ लेलक भुजाल बाजू की

सभ पाँतिमे 2122.12.1222 मात्राक्रम अछि

विजय नाथ झा

1

हमर आस आयास विश्वास अपने
चलल जा रहल नद दिशा न्यास अपने

मनोरथ भगीरथ शिवक साधना सित
करब पार मझधार छी पास अपने

चिदाकाश मधुमास मधुमत्त मति मन
विभव अछि विविधता उदय ह्रास अपने

खसल नीर निर्माल्य निधि नोर जानल
सकल स्रोत श्रुति विन्दु विन्यास अपने

अजर रूप विधु व्याल वसु विश्वमोहन
सदाशिव सदानंद उर स्वांस अपने

अहीं जन्मदाता अहीं छी समापक
हमर ध्यान धन ज्ञान आभस अपने

सभ पाँतिमे 122-122-122-122 मात्राक्रम अछि।

2
आउ बैसू कनी गप्प किछु आन हो
मन उभय गीत गीतल मुदित प्राण हो

क्लेश अछि श्लेष रजनी दिवा आप्त हम
भोर सायं वयः संधि सुखमान हो

रूप रस गंध यौवन अमर बोल सन
देह आलम्ब मिश्रित मधुप तान हो

व्यंजना लक्षणा काव्य कवि कर्म थिक
प्रेम परिपाक अभिधा सरस पान हो

की प्रयोजन कथी लेल भूपति कहू
कामना कहि रहल मान सम्मान हो

किछु कहल किछु सुनल नाम कविता लता
ई त्रिवेणी धवल दिव्यधी ज्ञान हो

सभ पाँतिमे 212-212-212-212 मात्राक्र अछि।

3

की कहब हम कहू के सुनत बात ई
कर्म फलहीन किछु गाछ बिन पात ई

अर्थ अनुराग जीवन भरल नहि हृदय
अरजलहुँ की कही रिक्त अछि हाथ ई

रूप अनुरूप धन ठोप चानन व्यसन
न्यास कलिकल्प नहि शब्द मधु वात ई

ढ़ोल पिपही क्षणिक रात्रि बरिआत धरि
हुत हवन भेल की जरि रहल गात ई

शून्य सन श्रेष्ठता श्रेयता आर की
बिन्दुसँ सिन्धु नभ इन्दुसँ प्राप्त ई

सभ पाँतिमे 212-212-212-212 मात्राक्र अछि।

4

जीवनक आशय सदाशय सूत्र शिवता सार किछु
बेस बीतल शेष एहिना अभिलषित आभार किछु

द्वन्द अछि आनंद तैयो क्लेश प्रियगर वारुणी
पी रहल हम जानि गंगा मधु मदिर नहि आर किछु

व्यस्तता आसक्ति आखर व्यंजना शाला सुरति

निस्सरित कविता सुकविता दर्प नहि अधिकार किछु

मोल मरलापर प्रकाशित साधना संसार एहि
धैर्य जिनकर धार गंगे माथ शिव घर बार किछु

याचना किनका करी की सब तकै छथि मुँह हमर
साध्य नहि स्वीकार्य अनुनय प्राप्ति लए उपहार किछु

सभ पाँतिमे 212-212-212-212 मात्राक्र अछि।

5

कथा नहि व्यथा आइ आनंद कानन
मुदित माधुरी अंक अधिकार आसन

व्यसन अछि सुमन संधि आवेग उर्मिल
फलल साधना स्निग्ध श्रृंगार सुखसन

विषय वेग संवेग अभियान मंगल
समन्वय सदाचार सुविचार कारण

सुदर्शन अहीँ जीवनक ज्योति जगमग
कठिन किन्तु बूझल अनल बीच सावन

अमरता विषय वस्तु पुरषार्थपूरक
क्रिया प्रकिया पथ सुपथ भेल कण कण

सभ पाँतिमे 122-122-122-122 मात्राक्रम अछि।

6

चलू आस पूरल समय साल घूरल
तृषा भेल दीपक समय आँखि मूनल

बहल जा रहल नद न भेटल कहाँ हद
हृदय भेल अछि तूर मद मोह तूरल

हुनक रज कमल माथ गंगा बनेने
सुवासित प्रकृति काम संयोग पूरल

अहीं हेतु छी सार संसार सौंसे
समाहित अहींमे प्रणय पाश झूलल

सटल ठोर रोमांच प्रियकर सुहाओन
वसंतक मदिर राग श्रृंगार घूरल

प्रयोजक कहाँ धरि शरीरक कहत के
विजय काम अभिराम जागल न सूतल

सभ पाँतिमे 122-122-122-122 मात्राक्रम अछि।

7

मन मुदित भेल अछि प्राण बलबान सन
जीवनक ज्योति जगमग अभय ज्ञान सन

जल्प संकल्प नहि द्वन्द अभिहत सतत
भिक्षु नरश्रेष्ठ श्रीपति मुकुल चान सन

हेतु अंतस अनल जल पवन भू गगन
कहि मिलन भाग्यशः भोग सुखमान सन

आत्मसत्ता जकर रूप प्रारूप कहि
भेल पौरुष सबल प्राप्ति अनुमान सन

अछि नमन कोटिशः मनु महामन रथी
रूप शत रूप विन्यास श्रीमान सन

सभ पाँतिमे 212-212-212-212 मात्राक्र अछि।

8

हमर पूजा हमर परिचय हमर श्रृंगार छी अपने
सकल सौभाग्य मन काया रुधिर संचार छी अपने

विषय किछु काम खलु कारी पतन आनंद बड़ भाड़ी
निशा रसराज रस झरझर सुरति सुख सार छी अपने

प्रयोजन संग किछु कारण स्पृहा अनुराग नहि एहिना
करू रनिवास एहि आँगन हमर परिवार छी अपने

विसंगति भेल हम मानल क्षमा अपराध हम कानल
निकटता आ किछु आनू हमर अधिकार छी अपने

सुनब हम एक नहि आगाँ अबल धीरज हमर डगमग
सम्हारू वा जेना मारू हमर सरकार छी अपने

विवेचन बेस आलोचन विजय देखल सुनल की नहि
बहै छथि नीर नारायण सुनल हम धार छी अपने

सभ पाँतिमे 1222-1222-1222-1222 मात्राक्रम अछि।

9
न कम सम बहुत नहि समावेश चाही
सधेने चली बेश ऋण शेष चाही

समादर प्रियक प्राणसन प्राणप्रिय हम
सरस रस सुधा जाह्नवी लेश चाही

विभव शब्द सागर भरल रूप आखर
सुखक सार संयम नियम श्लेष चाही

प्रयोजन प्रकृति जौं रतिक कामना प्रिय
मिलन युग्म आनंद आवेश चाही

महामन महालय विजय सार अपने
रही नहि रही चर्च अवशेष चाही

सभ पाँतिमे 122-122-122-122 मात्राक्रम अछि।

सभ गजल शाइरक प्रकाशित पोथी "अहींक लेल"सँ लेल गेल अछि।

2008सँ लऽ कऽ 2017 धरि

श्रीमती शांतिलक्ष्मी चौधरी

1
बूढ़ सन होइत गेलै गामक दुरदसा

जतय देखू ओतहि सभ ठामक दुरदसा

अंगना सहसह कुक्कुर नढ़िया गिदरबा
डीह सूखाइत लिच्ची आमक दुरदसा

की घुमब कासी मथुरा वा वृंदावने
अजगुते देखू चारू धामक दुरदसा

अस्मिता-सीताकेँ चोरेलक राबण
नोर छै झहरै, पग-पग रामक दुरदसा

शांतिलक्ष्मी कोनाकेँ जीवन खेपती
बेच नै पैसा, बढ़िते दामक दुरदसा

सभ पाँतिमे 2122 2222 2212 मात्राक्रम अछि।
चारिम शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघुकेँ दीर्घ मानल गेल अछि।

2
किछु लत्ती लतरल हमर आंगनमे
किछु अछि अँकुरल ऐँठार नाँघनमे

अपने दमपर लिखु नै अपन रेखा
कानय छी व्यर्थे अरन-काननमे

गिरगिट चमड़ीमे छी कियै पैसल
सभ बूझै अंतर राम रावणमे

निज गुण-अपगुणसँ छैक के बाँचल
के छथि झाँपल बीभूति चाननमे

ठकियो नै एना शांतिलक्ष्मीकँ
गिननै छथि दाँतो नाग-धामनमे

सभ पाँतिमे 2222-221-222 मात्राक्रम अछि।

3
छन्द रस नइँ सजा सकलहु पीरीतके
सदति लाड़ैत रहलहुँ कड़ुगर तीतके

कौतुहल शुभक ई पिहुकैते कोयली
हत बहेलक गुलेलहि सन जगरीतके

आस तैँ बनल नीले नभ बसितहुँ सखी
भसल दाहे बनल महलो सभ भीतके

कतहु जड़िये कटल छोंपल छीपो कतहु
जनु लगेलहु कलम अंतहु की मीतके

आब की शांतिलक्ष्मी गजभेरे सुतब
लगत लगले पता की ठक्कक थीतके

सभ पाँतिमे 2122 1222 2212 मात्राक्रम अछि।

4
मारू असतूरा सटाकँ नइँ
परमोदे प्रीतो, डटाकँ नइँ

अंतिम बुझिते लाति लतियेबै
दुइ-दिन अलमस्ती पटाकँ नइँ

बेटा सभ कबुलासँ भेलखिन्ह
बेटी बिटनूनो चटाकैँ नइँ

कहियो हाँ हमरो दिनो घुरतै
हँसि लिअ पीकहँसी ठठाकैँ नइँ

अटपट पटपट बाजु धुरछटहे
सिखले-पढ़हेले रटाकैँ नइँ

मारू बेसी शांतिलक्ष्मीकैँ
सभ धोखो-धरमो हटाकैँ नइँ

सभ पाँतिमे 222 221 222 मात्राक्रम अछि।
तेसर शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघुकैँ दीर्घ मानल गेल अछि।

5
एना अचुकबाण नै लगाऊ
एना टकध्यान नै लगाऊ

गल्पे तँ खनकैत बोल रुनझुन
पंचमसुरक तान नै लगाऊ

भेटल जते रूप छवि बहुत अछि
गणितक कुनू मान नै लगाऊ

टिमकय तरेगणक भनहि जीवन
कल्पक अरूष-चान नै लगाऊ

अछि उसरगल प्राण शांतिलक्ष्मी
निहुछै दुइभ धान नै लगाऊ

सभ पाँतिमे 221 221 2122 मात्राक्रम अछि।

ओमप्रकाश

1

राम जपैत छी रहम करू
कृष्ण सुमरि अहाँ करम करू

कष्ट अनकर बूझिकऽ सदिखन
धन्य कनी अपन जनम करू

कानि रहल बहिन-माय अपन
अंतरमे कनी शरम करू

पजरत आगि ठंढा हियमे
अपन विचारकेँ गरम करू

ओमक बात राजा सुनि लिअ
राजक आब किछु धरम करू

दीर्घ, ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ(मुतफाइलुन), दीर्घ, ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ
2-11212-2-112 (प्रत्येक पाँतिमे एक बेर)

2

हेतै खतम गुटबाज बेबस्था
बनतै सभक आवाज बेबस्था

भेलै बहुत चीरहरणक खेला
राखत निर्बलक लाज बेबस्था

देसक आँखिमे नोर नै रहतै
सजतै माथ बनि ताज बेबस्था

मिलतै सभक सुर ताल यौ ऐठाँ
एहन बनत ई साज बेबस्था

ओमक मोन कहि रहल छै सबकैँ
करतै आब किछु काज बेबस्था

दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-लघु, दीर्घ-दीर्घ-लघु-दीर्घ, दीर्घ-दीर्घ प्रत्येक पाँतिमे एक बेर।

3
कहियो तँ हमर घरमे चान एतै
नेनाक ठोर बिसरल गान गेतै

निर्जीव भेल बस्ती सगर सूतल
सुतनाइ यैह सबहक जान लेतै

मानक गुमान धरले रहत एतय
नोरक लपटिसँ झरकिकऽ मान जेतै

सुर ताल मिलत जखने सभक ऐठाँ
क्रान्तिक बिगुलसँ गुंजित तान हेतै

हक अपन ओम छीनत ताल ठोकिकऽ
छोडब किया, कियो की दान देतै

(दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ)-(ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ)-(ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ)
(मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन)- प्रत्येक पाँतिमे एक बेर

4

आँखिसँ नोर खसाबै छी किया एना

मोती अपन लुटाबै छी किया एना

खाली बातसँ भेंटत नै किछो एतय

तखनो बात बनाबै छी किया एना

सुनि बेथा तँ मजा लेबे करत दुनिया

बेथा अपन सुनाबै छी किया एना

अपने सीबऽ पडत फाटल करेजा ई

अनकर आस लगाबै छी किया एना

अमृतक घाट तकै छी बिखक पोखरिमे

अचरज ओम कराबै छी किया एना

(दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व) + (ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ) + (ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ)

(मफऊलातु-मफाईलुन-मफाईलुन)- 1 बेर प्रत्येक पाँतिमे

5

गजल

हमरा अहाँमे जे मेल छल

ओ ओहिना कोनो खेल छल

बान्हल सिनेहक हम डोरि जे

हुनका किया लागल जेल छल

पिछरल हमर डेगक की कहू
पघिलल करेजक से तेल छल

ककरो कियो किछु सुनलक कहाँ
एहन मचल रेलमपेल छल

"ओम"क करेजा सदिखन कहल
मुस्की हुनक हमरे लेल छल
-ओम प्रकाश
(दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ, दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व, दीर्घ)- प्रत्येक पाँतिमे एक बेर

6

मदीनाक मालिक अहाँ ई करा दिअ
करेजा हमर बस मदीना बना दिअ

हमर मोन निश्छल भऽ गमकै धरा पर
कृपा एतबा अपन हमरा पठा दिअ

बनै सगर दुनिया खुशी केर सागर
सभक ठोर एतेक मुस्की बसा दिअ

दया केर बरखा करू ऐ पतित पर
मनुक्खक कते मोल हमरा बता दिअ

दहा जाइ दुनिया सिनेहक नदीमे
अहाँ "ओम" कैँ प्रेम-कलमा पढा दिअ
(ऐ गजलक प्रेरणा हम एकटा प्रसिद्ध कव्वाली सँ लेने छी।)

बहरे-मुतकारिब

फऊलुन (ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ) - 4 बेर प्रत्येक पाँति मे
7

जन-गणक सेवक भेल देशक भार छै
जनताक मारि टका बनल बुधियार छै

चुप छी तँ बूझथि ओ, अहाँ कमजोर छी
मुँह ताकला सँ कहाँ मिलल अधिकार छै

बिन दाम नै वर केर बाप हिलैत अछि
घर मे गरीबक सदिखने अतिचार छै

हक नै गरीबक मारियौ सुनि लियऽ अहाँ
जरि रहल पेटक आगि बनि हथियार छै

झरकल सिनेहक बात "ओम"क की कहू
सगरो पसरल जरल हँसी भरमार छै
(बहरे-कामिल)
मुतफाइलुन(ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ)- 3 बेर प्रत्येक पाँति मे

राजीवरञ्जन मिश्र

1
बारल सभ पीर अपन हम ऐ केशक छाँह सघनपर
हारल जग जीत सगर बस ऐ मारुक कारि नयनपर

नै बुझलहुँ मोन कखन भासल धैलक संग हुनक आ
गहिया दिन राति रहल लटकल नेहक डोरि वयनपर

मोनक जे चाह पुरल से लखि रूपक चान रमनगर
नाचल हिय गात मयुर बनि मदमातल श्याम वरनपर

राखल परतारि चलल हम नित सोझे बाट सदति धरि
बाँचल नै चाहि लुटल हिय मतिमारल मंद हसनपर

राजीवक हाल कहब की नित ठानल आब रहब चुप
किछुए खन बाद मुदा पुनि सुधि हारल बोल बचनपर

222 + 2112+2 222+ 2112+2

2
मुरलीकेँ धुन सुना गेल ओ
झलकी देखा पड़ा गेल ओ

चुपचापे ठाढ़ एकातमे ...
मुसकीमे हिय रिझा गेल ओ

ककरा कोना कहब हाल की
यमुनाकेँ जल सुखा गेल ओ

जखने किछुओ कहल नेहमे
छलिया जे छल बुझा गेल ओ

हियकेँ राजीव सुनलक कखन
करमक टा गुण बता गेल ओ

222+2 12 2+12
3
मोन कहुँना मना लेब हम फेरसँ

राति गुम सुम बिता लेब हम फेरसँ

अछि बरल नेह बाती कहब मीत तऽ
फूकि सभटा मिझा लेब हम फेरसँ

गीत नेहक रुचल नै तखन हारि कऽ
दुख गजल गुनगुना लेब हम फेरसँ

चान चढ़िते हिया दाबि सूतब गऽ कि
घोंट दू गो चढ़ा लेब हम फेरसँ

नै सुनत हाक राजीव ओ आब जँ
चुप मुँहें घुरि विदा लेब हम फेरसँ

2122+ 122+1 22+11

4
सूरज पूरब उगबे करत
चन्ना घटबे बढ़बे करत

सत्ते गप थिक ई ओतबे
जनमल जे से मरबे करत

काबिल बुधिकँ रखलक सचर
सनकल बहकल बुरबे करत

पैघक छोटक टा मान जे
राखत से धरि जितबे करत

बरसाती बेंगक काज की

पड़िते बुन्नी बजबे करत

आइग फूसक सम्बंध टा
स्त्री पुरुषक नित रहबे करत

मानब सदिखन राजीवकैँ
पापक घइला फुटबे करत
222+2 22+12

5
हाड़ कँपकपा रहल अछि जाड़
देह कनकना रहल अछि जाड़

ठाढ़ भेल डाँर कसने दोमि
टांग थरथरा रहल अछि जाड़

बस गरीब आ अमीरी देख
बोल बड़बड़ा रहल अछि जाड़

साज बाज टोप चादर देखि
माथ धड़ खसा रहल अछि जाड़

कैथरी लदल मनुखकैँ पाबि
दाँत कटकटा रहल अछि जाड़

हाल की कहू अपन राजीव
मोन चटपटा रहल अछि जाड़

212 + 12+12 22+1
@ राजीव रंजन मिश्र

6

नै राम रहीमक झोक रहय
नै वेद कुरानक टोक चलय

किछु आर भने नै होइ मुदा
बस संग धऽ लोकक लोक सहय

नै ईद दिवाली भरिकँ मजा
आनंद सहित नित नेह लहय

हो राम रहीमक गान सदति
नै नामकँ खातिर जीव मरय

राजीव सुनब नै लोककँ कहल
किछु लोक तऽ अतबे खेल करय

221 122 2112

7

जिनगी खेल तमाशा टा
आसक संग निराशा टा

के जानल गऽ कखन केहन
दैबक हाथ तऽ पासा टा

रखने नेक विचारक बल
जिनगी एक बतासा टा

सदिखन आस अपन हाथक
भेटल कोन नबासा टा

चल राजीव सदति सत पथ
किछु खन लेल कुहासा टा

2221 1222

अमित मिश्र

1
राति चन्ना उगल छलै की ने
घोघ हुनकर उठल छलै की ने

देश भरिमे सुखार पैसल छै
झील नैनक भरल छलै की ने

ने खसल तेल ने धुआँ उठलै
मोन ओकर जरल छलै की ने

साँझ धरि साँस उजरि गेलै यौ
प्रात नैना मिलल छलै की ने

जखन भेलै अमित घटे भेलै
लाभ अनकर जुटल छलै की ने

212-212-1222
फाइलुन-फाइलुन-मफाईलुन

2

प्रेम करब नीक लगैत अछि हमरा
मीत बनब नीक लगैत अछि हमरा

आब तँ टाका परधान बनलै तँ
नेत खसब नीक लगैत अछि हमरा

हमर हँसी छीन हँसै सभक मुख तँ
खूब हँसब नीक लगैत अछि हमरा

दैत रहू चोट अहाँ हमर तनपर
घाउ भरब नीक लगैत अछि हमरा

लेखन छै पैघ नशा, तऽ रहि भूखल
गीत रचब नीक लगैत अछि हमरा
2112-2112-1222

3

तरेगण लाख छै तैयौ नगर अन्हार रहिते छै
बरू छै भीड़ दुनियाँमे मनुख एसगर चलिते छै

सजल छै आँखिमे सपना नदी नाला हरित धरती
जकर बेटा सुखी ओ माइक श्रृंगार सजिते छै

गजब छै रीत दुनियाँ केर मरने राख धरि फेकै
मुदा सदिखन सभक मनमे अमिट सन यादि बसिते छै

अहा वा आह धरि बाजब अहाँ आ बाट निज पकड़ब
अहींकँ हास्य अभिनयमे हमर संसार जरिते छै

सगर छै खेल आखरकँ हँसाबै आ कनाबै छै

कतौ टुटिते हिया छै आ कतौ नव नेह रचिते छै

4

जगमे तँ सब दोषी मुदा दोष नै दी
नाँगर कहै आँगन बहुत टेढ़ छै जी

टूटल महल फाटल वसन सी सकब हम
कोना कऽ फाटल कोढ़ टूटल हिया सी

छै शहर भरिमे गजब डर आइ पसरल
कानै हवा लागैछ फेरो जरल धी

सबकेँ कहै छी चोर सब ठाम घपला
छथि चोर सजनी अपन बाजू करब की

ऐना सदति देखैत छी आ सजै छी
निज मोनमे यौ भाइ देखै कहाँ छी

टाका बनल छै काल सुखमे अमित के
छै रीत एहन पाइ खातिर मरै छी

2212-2212-2122

5

दरद नुकाएब बहुत कठिन छै

नोर सुखाएब बहुत कठिन छै

पानि रहत कतबो लगमे मुदा
आगि मिझाएब बहुत कठिन छै
बदलल युगमे बदलल छै नजरि
लाज बचाएब बहुत कठिन छै

लोक सगर पूरि रहल छै मुदा
सपन पुराएब बहुत कठिन छै

आगि मिझाओत अमित महलकैं
द्वेष मिझाएब बहुत कठिन छै

2112-2112-212

6
एहि बतहा संसारमे एसगर छी चिन्हार अहाँ
स्वार्थ खातिर चिन्है बला लऽग जीवनक आधार अहाँ

कान मूनल नै जा सकै छै आँखि बरु हमर बन्न करब
देख नै सकलौं आइ घटना सुनि रहल चित्कार अहाँ

अपन सोचल बाटपर जिनगी आइ धरि नै जीब सकल
मनक हारल बनि राति-दिन केलौं बहुत लाचार अहाँ

सुख सदति लेलक बाँटि सब, एहन छलै संगी हमरो
मानि लिअ ई गप मीत छी नोरोक हिस्सेदार अहाँ

शब्द बिनु अखरा पड़ल धुन आ भाव बिनु शब्दो ठमकल
हमर रचना संसार रचलौं लय सजल सीतार अहाँ

फूल सन अछि मन "अमित" चारू दिससँ बैसू काँट बनल
प्राण तखने बचतै सभक मानत बहुत उपकार अहाँ

2122-2212-2212-22112

7
ने खसल ठनका ने हवा उठल बेसी
तैयो मरल निर्धन धनी बचल बेसी

बड़का गढ़ल छै घैल मस्तिस्क मनुखक
नेहक कमल कम छै अहं भरल बेसी

सोचल सपन हेतै जँ सत्ते तँ बढ़ियाँ
आनक विकासक लेल यदि गढ़ल बेसी

बैरिन बनल तकनीक मजदूर मानै
पढ़ले तँ काजक निरक्षर पड़ल बेसी

जे छलै नै आलेख नम्हरसँ संभव
मुँहपर हँसी बनि भाव छल लिखल बेसी

मुस्तफइलुन-मुस्तफइलुन-मफऊलात
2212-2212-2122
बहरे-सरीअ
पंकज चौधरी "नवलश्री"

1

पसरल जाल घोटालाक
लागल टाल घोटालाक

छै पहिलुकसँ दोसर बीस ...
अजबे हाल घोटालाक

नेताजीक किरदानीसँ
छूटल छाल घोटालाक

जनसेवक तऽ छै ऊपरसँ
भीतर खाल घोटालाक

धोती खोलि छै पोछैत
लागल थाल घोटालाक

बनि निर्लज्ज सीना तानि
बजबै गाल घोटालाक

संसद छै बनल मैदान
ठोकै ताल घोटालाक

छोड़त जान कहिया नवल
ई जंजाल घोटालाक

मात्रा क्रम : 2221+2221

2

जकरेसँ भतबरी तकरेसँ मीत सन
हाँसुक बिआहमे खुरपीक गीत सन

सुनबाक फूसि छै आदति जँ ओकरा

बाजत जँ सत कियो लगतैक तीत सन

छुच्छे करेज छै भावक अकाल बड़
बनि गेल आब ई नऽवयुगक रीत सन ...

हारल जँ लड़ि कऽ नै ओ हारि हारि छै
लागैछ हारियो ओ मधुर जीत सन

पाहुनसँ भेल छै दलमल दलान जे
नमहर दलान ओ लागैछ बीत सन

जेठक दुपहरियोमे बोल मधुरगर
अनमन लगैत छै फगुआक शीत सन

चहुँदिस गजलसँ छै बरसैत नवल यौ
मधुरिम सिनेह नवकनिआँक प्रीत सन

मात्राक्रम- 221+212 (दू बेर सभ पांतिमे)
3
घोघ हटिते अहाँके गजल बनि जेतै
रूप सजिते अहाँके गजल बनि जेतै

हटिक बैसल अहाँ तें गजल दम धेने
संग अबिते अहाँके गजल बनि जेतै

देखि चुप्पी अहाँके ठमकि हम गेलौं
हँसि कऽ बजिते अहाँके गजल बनि जेतै

बेबहर पांति सजतै एसगर कोना
मीत बनिते अहाँके गजल बनि जेतै

नेह भरि दी अहाँ मतलासँ मकता धरि
भाव पबिते अहाँके गजल बनि जेतै

प्रात करतै नवल पुनि जगरने केने
बाट तकिते अहाँके गजल बनि जेतै

बहरे मुशाकिल/ मात्रा क्रम: 2122+1222+1222

4
प्राण टांगल रहत सजना पाती लिखब
नेह बान्हल रहत सजना पाती लिखब

जा कऽ परदेस जुनि हमरा बिसरब अहाँ
आश लागल रहत सजना पाती लिखब

बाट जोहब अहाँके बनि जोगिन पिया
नैन थाकल रहत सजना पाती लिखब

स्वागतक लेल चौकठि ओगरने रहब
हार गांथल रहत सजना पाती लिखब

आंखि काजर सजल केशो गुहने रहब
ठोढ़ रांगल रहत सजना पाती लिखब

दिन अहाँ बिन हमर रहतै रूसल दुखी
राति जागल रहत सजना पाती लिखब

देशमे छी नवल   चाहे परदेसमे

मोन तागल रहत सजना पाती लिखब

*फाइलातुन+मफाईलुन+मुस्तफइलुन / मात्रा क्रम : 2122-1222-2212

5
लाजसँ लाल भेलौं अहाँ
आँचरिमे नुकेलौं अहाँ

सुनु धड़कै करेजा कते
सोझसँ कात भेलौं अहाँ

लाजसँ लोल दबने मुदा
आंखिसँ बाजि गेलौं अहाँ

कारी आंखि काजर सजल
जानसँ मारि देलौं अहाँ

सुनि नवलक सिनेहक गजल
जगके छोड़ि एलौं अहाँ

बहरे मुक्तबिज/मात्रा क्रम :2221+2212

6
लोभ छोड़ू द्वेष भागत
नेह बाँटू नीक लागत

सच जँ बाजब मान भेटत
फूसिकें सभ लोल दागत

मैथिली भाषा अपन अछि
मैथिलक बड़ पैघ तागत

एकता मैथिल जँ राखब
सुतल मिथिला फेर जागत

फेर हँसती मैथिली माँ
नवल नव-विश्वास जागत

*फाइलातुन+फाइलातुन / मात्राक्रम-2122+2122

7
अनकर कहल मानब कते
खा-खा ठेस कानब कते

बस किछु दिनक जिनगी तऽ नै
दिन जिनगीक गानब कते

छोड़ू पुरनका राग सभ
ऐ सिट्ठीसँ रऽस छानब कते

बिनु साधनक की साधना
थूकसँ सातु सानब कते

चाही अपन अधिकार जे
माँगू नवल ठानब कते

बहरे मुक्तबिज/मात्रा क्रम : 2221-2212

जगदानंद झा "मनु"

1

बेदरदिया नै दरदिया जानै हमर
टाकासँ जुल्मी प्रेमकैं गानै हमर

सदिखन जरैए मन विरहकैं आगिमे
तैयो पिया नै किछु दरद मानै हमर

साउन बितल घुरियो कs नै एला पिया
नहि खीचि हुनका प्रेम लऽग आनै हमर

बरखा खुबे बरिसय तँ गरजय बदरबा
छतिया दगध भेलै हिया कानै हमर

बसला पिया मनु दूर बड़ परदेशमे
झरकल हिया कनिको तँ नै मानै हमर

(बहरे रजज, मात्रा क्रम - 2212 तीन-तीन बेर सभ पाँतिमे)

2

भाइ भाइसँ बैरीन केलक रुपैया
गाम छोड़ा सभकैं भगेलक रुपैया

आँखि मुँह मुनि परदेसमे जा कऽ बसलहुँ
सगर बुझितो माहुर पियेलक रुपैया

आइरे-आरि खऽर बटोरैत माए
खेतमे बाबूकैं कनेलक रुपैया

गोल चश्मा मुन्सी लगा ताकए की
खून चुसि चुसि सभटा दबेलक रुपैया

भाइ बाबूकँ मनु बिसरि जाउ छनमे
राज नै आब तँ घर चलेलक रुपैया

(बहरे खफीक, मात्रा क्रम - 2122-2212-2122)
(ऐ गजलक तेसर शेरक पहिल पाँतिमे आरि केर मात्राक्रम आइर जकाँ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

3

टोना ओहे जे टोनै सभकँ
ताड़ी ओहे जे तारै सभकँ

लेखक ओहे जे मानै मनकँ
रचना सभ हुनकर छूबै सभकँ

कनियाँ ओहे जे भाबै वरकँ
सासुरमे अपना बूझै सभकँ

नेता ओहे जे माने विधि नै
जूता मुक्का जे खालै सभकँ

घरकँ बेटा नै राखै मनदू
आश्रम आगू ओ जीतै सभकँ

(मात्रा क्रम - नअ नअटा दीर्घ सभ पाँतिमे)

4

कखनो कियो हमरो प्रेम करबे करत
गेलहुँ जँ नै घर ओ बाट तकबे करत

भागैत अछि टोलक लोक नामसँ हमर
एकदिन सभ हमरो संग चलबे करत

बैसल घरे घर सभ कान मुनने अपन
दोसर मुँहसँ हमरो लेल सुनबे करत

के एतए अमृत पी   कए आएल
सभ एक नै दोसर दिन मरबे करत

जे प्रेम केलक कहियो जँ मिसियो मनुसँ
दू नोर मुइलापर ओ तँ कनबे करत

(बहरे सलीम, मात्रा क्रम-2212-2221-2221)

5

कोना अहाँकेँ घुरि कहब आबै लेल
बड़ दूर गेलौं टाका कमाबै लेल

नै रीत कनिको प्रीतक बुझल पहिनेसँ
टूटल करेजा अछि किछु सुनाबै लेल

लागल कपारक ठोकर जखन देखलहुँ
नै आँखिमे नोरक बुन नुकाबै लेल

बुझलौं अहाँ बैसल मोनमे छी हमर
ई दूर गेलौं हमरा कनाबै लेल

कोना कऽ मनु कहतै आब अप्पन दोख
घुरि आउ फेरसँ संसार बसाबै लेल

(बह्रे- सलीम, मात्रा क्रम-2212-2221-2221)

6
आइ सगरो गाममे हाहाकार छै
मचल एना ई किए अत्याचार छै

आँखि मुनने बोगला बैसल भगत बनि
खून पीबै लेल कोना तैयार छै

देखतै के केकरा आजुक समयमे
देशकँ सिस्टम तँ अपने बेमार छै

देखते मुँह पाइकँ कोना मुँह मोरलक
मांगि नै लेए खगल सभ बेकार छै

हम छलौं आ एखनो धरि एसगर छी
केकरो मनपर मनुक नै अधिकार छै

(बह्रे जदीद, मात्रा क्रम - 2122-2122-2212)

कुंदन कुमार कर्ण

1
नेहक झूठ आश नै दिअ

धरती बिनु अकाश नै दिअ

हो अस्तित्व नै हमर जतऽ
तेहन ठाम बास नै दिअ

अन्हारे रहत हमर हिय
ई फुसिकेँ प्रकाश नै दिअ

ओ अछि जाहिमे बसल नै
से बेकार साँस नै दिअ

नै चाही सिनेह एहन
जिनगीमे हतास नै दिअ

मात्रा क्रम : 2221-2122
(मफऊलात–फाइलातुन)

2
हमरा देखिते ओ लजा गेलै
जादू नेहकेँ ओ चला गेलै

भेलै कात नै ई नजरि कनियो
चुप्पे चाप नैनसँ बजा गेलै

रहितो दूर देहसँ हमर जे ओ
छातीमे बुझायल सटा गेलै

अनचिन्हार छल ओ मुदा एखन
सदिखन लेल अप्पन बना गेलै

कुन्दन केर ओ मानिकैँ जिनगी
कोमल सन हियामे बसा गेलै

मात्रा क्रम:2221-2212-22

3
दर्दसँ भरल गजल छी हम
शोकसँ सजल महल छी हम

सुख केर आशमे बैसल
दुखमे खिलल कमल छी हम

भितरी उदास रहितो बस
बाहरसँ बनि हजल छी हम

जिनगी कऽ बाटपर सदिखन
सहि चोट नित चलल छी हम

कुन्दन सुना रहल अछि ई
संघर्षमे अटल छी हम

मात्रा क्रम :2212+1222

4
नेताक भेषमें सभ कामचोर छैक
तामससँ लोक देशक तँ अघोर छैक

चुल्हा गरीबके दिन राति छैक बन्द
जे छैक भ्रष्ट घर ओकर इजोर छैक

ककरा करत भरोसा आम लोक आब
निच्चा अकान उप्पर घूसखोर छैक

चाही विकास चाही नै विनाश आब
जनताक ठोरपर मचिगेल शोर छैक

आलोचना करत कुन्दन कतेक आर
जे चोर ओकरे मुँह एत जोर छैक

221+212+221+2121

राम कुमार मिश्र

1

हरियर किचोर
पटुआक झोर

लागल बकोर
पाकल परोर

छुटलै कतेक
पेटक मड़ोर

रोपल जजाति
भेटल चिचोर

मनसा बिदेस

पहिरब पटोर

प्रेमक सनेस
चकबा चकोर

बातक नछोर
जिनगी कठोर

‘राम’क भरोस
भेटत इजोर

सभ पाँतिमे मात्राक्रम - 22121

2

सहसह लोकक भीड़ देखल हम
सुच्चा लोकक लेल बेकल हम

कटुता क्रोधक उमर बढ़लै टा
नेहक देखल लाश जेकल हम

माहुर मीझर गप्प गीजै छथि
माहुर गप्पक टीस सेकल हम

बलगर शोणित पीबि मोटेलै
अबला श्राद्धक पात फेकल हम

जीयब निकहा दिनक आशामें

आशक सिम्मर फ़ूल सेबल हम

सभ पाँतिमे मात्राक्रम –2222-21-222

3

खेती अगता आइ   बुझलियै
करमक झटहा आइ बुझलियै

असगर जिनगी मगन रही धरि
लोकक खगता आइ बुझलियै

अनकर तीमन नीक लगै छल
बारिक पटुआ आइ बुझलियै

बापक टाका खूब उरेलहुँ
अप्पन बटुआ आइ बुझलियै

शहरी जिनगी मिट्ठ लगै छल
गामक कुटिया आइ बुझलियै

सभ पाँतिमे मात्राक्रम –2222 21 122

4

मूड हमर किछु गरबर अछि
बोल हुनक बड करगर अछि

सूनि हुनक बोली बुझलौ
बाप बऽरक बड धरगर अछि

दाँत टुटल मूँहक सभटा

पाइ बेर धरि दतगर अछि

रीति कोन बेटा बेचब
गप्प हमर धरि खरगर अछि

'राम' कतय बेटी ब्याहब
गाम-गाम में अजगर अछि

सभ पाँतिमे मात्राक्रम – 2121+2222

5
जाति- धर्मक जुन्नामें अँटियाइते रहलहुँ
छूत-अछुतक अदहनमें उधियाइते रहलहुँ

पेट कोना जड़लै पतियौलक कियो कहिया
झूठ-साँचक भाषण धरि पतियाइते रहलहुँ

राज-पाटक बखड़ामें बटलै अपन मानव
ऊँच-नीचक झगड़ामें लतियाइते रहलहुँ

प्यास लगले रहलै गंगा धारमें तैयो
पाप-पुण्यक गंगामें भसियाइते रहलहुँ

'राम' मनुखक बूझत कहिया मोल ई दुनिया
कोण-साँन्हिक फ़ेकल धरि बसियाइते रहलहुँ

सभ पाँतिमे मात्राक्रम - 2122+222+2212+22

6
बताह भेलइ मनुआं आब कोना मानत

पुरान यादिक गठरी फोलि फेरो कानत

करेज़ चनकल टुकरी भेल संगी रूसल
समेट सभटा टूटल टूक फेरो गानत

बिसैर नहि पेलक ओकर मधुर यादक पल
सिनेह नहि बिसरत   ई बात फ़ेरो ठानत

ससैर गेलै प्रेमक ताग छलई   तानल
सहेज सभटा प्रेमक ताग फेरो तानत

सचेत कतबो केलहुँ मोन अप्पन कोना
जड़ैत डिबिया सन मोनक इ गप के जानत

सभ पाँतिमे मात्राक्रम 1212+2222+122+22

प्रदीप पुष्प

1

के की कहलक की कहू
के की ठकलक की कहू

हमरो उजरे रंग छ'ल
के की दगलक की कहू

भेलै साधू आब सब
के की चिखलक की कहू

माया बड़का पैघ ई
के की रचलक की कहू

अखनो नै छी पास हम
के की जँचलक की कहू

सभ पाँतिमे 22-22-212 मात्राक्रम अछि।

2

पढल पंडित मुदा रोटीक मारल छी
बजै छी सत्य हम थोंथीक हारल छी

बुझू कोना सबसँ काते रहै छी हम
उचितवक्ता बनै छी तें त' टारल छी

दियादेकें घरक घटना मुदा धनि सन
कटेबै केश कोना हम जँ बारल छी

मधुर बनबाक छल हमरा मुदा हमरो
लगैए नोनगर लाड़निसँ लाड़ल छी

लगै छल नीक नाथूरामकेँ पोथी
मुदा गाँधीक साड़ा संग गाड़ल छी

किओ ने पूजि रहलै कोन गलती यौ
बिना सेनूर अरिपन 'पुष्प' पाड़ल छी

सभ पाँतिमे 1222- 1222- 1222 मात्राक्रम अछि (बहरे हजज)

3

गाछी मोनक सुड्डाह भेलै
जिनगी सेरायल चाह भेलै

हम शोणित जकरा दान देलौं
ओ नोंतक नीपरबाह भेलै

हम्मर छै झरकल चान सत्ते
सुरुजो अनमन सीयाह भेलै

हम ककरा बुझियै हीत जगमे
सब हीतो जन फुसियाह भेलै

जे हेमनि धरि कंठी ल' बूलल
ओ माँछक बड़ हबकाह भेलै

सभ पाँतिमे 222-22-2122 मात्राक्रम अछि
4

जकरा दुख छै तकरा दुख
ढाकी भरि-भरि हमरा दुख

जखने ताकू भदबा छै,
पोथी दुख आ पतरा दुख

सोल्कन बाभन भोगै छै,
पिछड़ा दुख आ अगड़ा दुख

कानै छै मोटू पतलू
नकदी दुख आ खुदरा दुख

ककरो कनबै सतमहला
ककरो खर आ खपड़ा दुख

सभ पाँतिमे 222-222-2 मात्राक्रम अछि

नीरज कर्ण

1
अहाँक यादि में पागल पागल
अहाँक रूप के मारल मारल

गनैत मेघ के चंदा तारा
निछोह राति में जागल जागल

चमकि रहल छलै अँगना मोनक
अहींक लेल छल पोछल पाछल

कतेक बेर तक ताकब रस्ता
बिछोह आगि के जारल जारल

उछेह राखि हम नेहक सागर
फिरैत बाध में भागल भागल

सनेस यैह टा भेटल नीरज
करेज राख सन राखल राखल

प्रत्येक पाँति में मात्राक्रम 121212-2222 अछि।

2

कोनो फूल फूलल अहाँके मुस्की
कोनो तान छेड़ल अहाँके मुस्की

कस्तूरी जकाँ छै सुगंधित साँसे
चारु कात पसरल अहाँके मुस्की

मज्जर आमके छै कि की गमकै छै
एगो गाछ मजरल अहाँके मुस्की

सिंगरहार चंपा चमेली गेना
एक्के ताग गूथल अहाँके मुस्की

तीरक नोखके अधमरल छै सबतर
एहन बाण साधल अहाँके मुस्की

धड़कै छै करेजा कते सब लोकक
निसदिन देखि निखरल अहाँके मुस्की

जिनगी भरि पियासल रहल बड नीरज
अमरित बनिक' बरसल अहाँके मुस्की

सब पंक्तिमे मात्राक्रम 2221-2212-222 अछि

3

ने रूप छै ने रंग छै तोरा जकाँ
ने बोल छै ने ढंग छै तोरा जकाँ

ने गीत छै ने छंद छै ने राग छै
ने ढोल ने मिरदंग छै तोरा जकाँ

मखमल कही वा संगमरमर सन कही
छै झूठ सब ने अंग छै तोरा जकाँ

किछ दूर चललौं साथ हम सबके मुदा
ने सोर ने हुड़दंग छै तोरा जकाँ

सब लोग छै साथे मुदा साँचे कही
ने मोह माया संग छै तोरा जकाँ

नीरज कहै तू छैं अलग अनमोल छैं
एहन कहाँ अतरंग छै तोरा जकाँ

सब पाँतिमे मात्राक्रम 2212-2212-2212 अछि।

4
मोहक नयन तोहर नयन
चंचल नयन सुन्दर नयन

खटगर सनक मिठगर सनक
रसमे सनल रसगर नयन

मधुबन नयन चानन नयन
छौ प्रेमके कानन नयन

किछु जोगमे किछु टोनमे
किछु मन्त्रमे बान्हल नयन

छौ रूप तोहर चान सन
आ चान सन शीतल नयन

सबमे अलग मुखमे सजल
छौ प्रेमरस भीजल नयन

भारी नयन आरी नयन
छौ मेघ सन कारी नयन

काजर सजल जौं आँखिमे
बस भेल दूधारी नयन

किछु नै बुझल मासूम बड़
अनबुझ मुदा शातिर नयन

सौ जानमारुक बाण सन
बोझल रहल कातिल नयन

सभ पाँतिमे 2212 2212 मात्रक्रम अछि।
5
कहाँसँ एलौं
उधम मचेलौं

अनार पौने
बिमार भेलौं

कतेक भाषण
सुना पड़ेलौं

हिसाब पोथी
चिबा पचेलौं

नहा क' गंगो
कहाँ जुरेलौं

फकीर जनता
अहाँ अघेलौं

सब पाँतिमे मात्राक्रम 121-22 अछि।

सरल वार्णिक बहर

इरा मल्लिक

1

बाट जाम होय कि मगज विकास रुकबे करत
बेइमान हो नेता तँ देशक नैया डूबबे करत

पूँजीपति हो लालची चोर धनबटोर सूदखोर
विकराल मँहगाइ तँ आसमान छुबबे करत

भूखसँ बिलबिलाइत अछि बाल बच्चा वृध्दजन
अइ सरकार के थूका फजीहत करबे करत

बढ़ैत जनसँख्यासँ त्रस्त अछि सौंसे सँसार आइ
बेरोजगारीक मारिसँ लाचार तँ होबहे पड़त

जहि देशमे होय एकता अखँडताक दिव्यमंत्र

ओते सुख शांति समृध्दि के त्रिवेणी बहबे करत

2
ई पोथी तँ हम नै पढ़बै ई तँ बहुत मोटगर छै
मुदा लगैए पढ़हे पड़तै करची बड्ड पातर छै

मिठका पुआ पकबै बाबी छन-मन भनसा घरमे
जत्ते सुन्दरि हम्मर बाबी ततबे पूआ मिठगर छै

बनलै पूआ लगलै भूख गे बुढ़िया हमरा तँ बेसी दे
ई धानी पातक चटनी तँ लागै बहुत झँसगर छै

ओकरा तँ बाबी देलकै छोटकी पूआ वाह भाइ वाह
रे नंगटा देखही हम्मर थारी तँ खुब्बे भरिगर छै

नेना भुटका मगन भेल छै बाबी हँसै छै तरे-तर
हमरा लेल तँ देवी छै जकरासँ घर डटगर छै

कौआ रे नै कर लुप-लुप पूआ धेने छौ बाबी तोरो ले
गाछसँ तों निच्चा उतर आमक गाछ झमटगर छै

सरल वार्णिक 20

स्वाती लाल

1
बहन्ना ओकर कत्तेक सुनिऐ बड़ निष्ठुर मन मीत हमर अछि
बदलैत मौसम डर लगैए बड़ ब्याकुल सन प्रीत हमर अछि

कहब सुनब किछु ने बाँकी राखब हृदयकँ भीतर आब तँ हम

जीबन पथपर साथ चलब हम ओकरे संग हीत हमर अछि

बितल मास बसन्ती राग बसन्ती पतंग बनी उड़ि पहुँचितौं हम
लोक लाजसँ पाएर उठल नै केहन समाजक रीत हमर अछि

पूर्ण चन्द्र छै मुदा लगैत अमाबस अन्हार बड़ राति बितत कोना
प्रकाश पुँज बनी आयल जौं बुझब तखन हम जीत हमर अछि

चानक इजोरिया सँ मनक अन्हरिया दुर कोना कऽ भगबिऐ हम
फेर उठल दरद मनमे बिरह भरल बस गीत हमर अछि
(बर्ण- 26)

मुन्ना जी

1
नजरि झाँपि देहकेँ बजार बना लैए
बिनु बिआहो केकरो भतार बना लैए

मानू नै छै सामर्थ्य बुझबाक यथार्थकेँ
तें कल्पनेमे उड़ि कऽ संसार बना लैए

सत्य कही तँ जिनगी बेकार छै लोकक
गाम नै शहरमे परिवार बना लैए

रहै छै आगि जखन स्वार्थ केर मोनमे
तखन गदहोकेँ ओ भजार बना लैए

गुजारि उमेर धरैए बानि समाजक
ता धरि तँ जिनगीकेँ पहाड़ बना लैए

आखर-----15

2
शब्दसँ हटि शब्द-सारसँ काज चलाबैए लोक
अर्थकेँ अनर्थ कऽ तँआब पसाही लगाबैए लोक

सभहँक चित्त तँ स्थिर नै रहि पबै छै सदिखन
जिन्दो लोककेँ मरल कहि फायदा उठाबैए लोक

सभटा आब बिसरि जाइछ लोक स्वार्थ-सिद्धि बास्ते
नाङ्टोकेँ खुजल मंचपर नचाबऽ चाहैए लोक

बिसरि औकाति बेसियोमे अतृप्तिक भान होइ छै
तखन भिजलो काठकेँ धधका तापऽ चाहैए लोक

शब्दक अर्थ ज्ञान वास्ते फलखति नै होइत छै
मुदा शब्द जोड़ि रचनाकार कहाबऽ चाहैए लोक

आखर-----19

प्रभात राय भट्ट
1
भरल जोवनमे दुःख देलौं अपार सजाना
हमर जिनगी लगैए आब अन्हार सजना

छोड़ि हमरा पिया गेलौं परदेश जहियासँ
फूटल तहियासँ ई करम कपार सजना

सहि जाएत छी बैशाख जेठक गर्मी कहुना

सहल नै जाइए जबानी के गुमार सजना

अहींक वियोग में धेने छी विरहिन भेष यौ
नीक नै लगैय हमरा शौख श्रृंगार सजना

चान देखैए चकोर दिलमे उठैए हिलोर
खंडी-खंडी भेल दिल हमर हजार सजना

मोन करैए माहुर खा छोड़इ दितौं दुनिया
मुदा मरहू नै दैए अहाँक पियार सजना

वर्ण-17

2
निरास जिनगीक अहीं हमर नव आस छी
हम विहिनि कथा अहाँ हमर उपन्यास छी

हम पतझर बगिया के मुरझाएल फूल
अहाँ रजनीगंधा गुलाब फूलक सुवास छी

हम नीम गाछ तीत अछि हमर सभ पात
मधुर फलमे अहाँ सभ फलसँ मिठास छी

कर्मक मरल छलहूँ हम जगसँ हारल
निरसल जीनगीक अहीँ हमर पियास छी

देखलौं बड खेला ई जग अछि स्वार्थक मेला
स्वार्थक संसारमे अहीँ निस्वार्थ विस्वास छी

श्वास लेब छल मुश्किल छलहुँ हम बेजान

ई बाँचल प्राण प्रभात अहीँ हमर श्वास छी

वर्ण-17

3
श्रद्धा सुमन मोन उपवनमे प्रीतम
अहिं हमर मोन चितवनमे प्रीतम

प्रेम परागक अनुराग अछि जीवन
श्याम राधा मिलन वृन्दावनमे प्रीतम

चलू जतय बहैए प्रेम स्नेह सरिता
सिया रामक संग रामवनमे प्रीतम

रुक्मिणी बनी विरह कोना हम जियब
हमहू जाएब लक्ष्मणवनमे प्रीतम

अढ़ाइ अक्षर प्रेमक प्रेममे संसार
प्रेम बिनु जीव कोना भवनमे प्रीतम

वर्ण-15

4
हम अहाँ संग चलैत रहब जाधरि छै जिनगी
दुःख सुख हम सभटा सहब जाधरि छै जिनगी

हवा बयार कतबो तेज बहतै छोड़ब नै संग
अहाँक सूरत देख कS जियब जाधरि छै जिनगी

निरास भाव केर त्याग करू आशाक दीप जरा कs
जीवनसँ हम संघर्ष करब जाधरि छै जिनगी

विपतिक घड़ीमे देखैत चलु भाग्य केर तमाशा
अपनो भाग्य बदलतै कहब जाधरि छै जिनगी

प्रभात पतझर गुलजार जीवनक बगियामे
प्रेम सनेह नदिया में बहब जाधरि छै जिनगी

वर्ण-19

5
अप्पन जिनगीकेँ अप्पने सजाएल करू
अप्पन स्वर्णिम भविष्य रचाएल करू

बाट ककर तकैत छी ई व्यस्त जमानामे
अप्पन बाटक काँट खुद हटाएल करू

बोझ कते बनल रहब माए बाप पर
कर्मशील बनि कय दुःख भगाएल करू

असफलतासँ लडै ले अहाँ हिमत धरु
कर्मक्षेत्रसँ मुँह नुका नै पडाएल करू

हार मानू नै जीनगीसँ जाधरि छै जिनगी
जीत लेल अहाँ हिम्मतकेँ बढ़ाएल करू

चलल करू डगर सदिखन एसगर
ककरो सहाराकें सीढ़ी नै बनाएल करू

उलझन बहुत भेटत जीवन पथमे
पथिक बनि उलझन सोझराएल करू

हेतए कालरात्रिक अस्त नव-प्रभात संग
अमावस में आशा के दीप जराएल करू

वर्ण -16

उमेश मंडल

1

एतऽ माथ चकराइए चलू घुरि चली
तनोसँ तन छुबाइए चलू घुरि चली

कियो ककरो नहि देखैए ऐ समाजमे
मोने मन झगड़ाइए चलू घुरि चली

गोर मौगी गौरवे आन्हर भेलि अड़ल
करिया बाट बुझाइए चलू घुरि चली

कोन उपाए लगाबी तौड़ैले ऐ फानीकेँ
टूटि मन जे कनाइए चलू घुरि चली

करब नै कोनो आस ऐ समाजसँ हम
उमेश जँ घुरियाइए चलू घुरि चली

2

कल्याणक बाट नै पकड़तै लगैए ई
भाँड़ि-भाँड़ि सभकेँ झपटतै लगैए ई

अकालोमे काल बनि बौएलक सभकेँ
किछु बाजी तँ और मखड़तै लगैए ई

कोनो आंगुर कटने अपने होइ घा
भेद नै करबै तँ झगड़तै लगैए ई

मुँह सीब कऽ रहब तँ रहि सकैत छी
लोक गीत जँ गेबै चहकतै लगैए ई

छोड़ि देने टूटि जाएत समाज अपन
उमेश जोड़तै तँ चहकतै लगैए ई

विनीत उत्पल

1

तात-तात औ तात, सभ दिश अछि भ्रष्टाचार देखै छी
के राजा के रंक, सभक यैह अछि शिष्टाचार देखै छी

घूस दियो, घूस लियो, घूस पिबू,घूस खाइ जाउ यौ
घूस अछि हमर ब्रहम, ई अछि सदाचार देखै छी

घूसं ब्रह्मा, घूसं विष्णु, घूसं देव महेश्वरः सुनै छी
घूसं जीवन आ मरणं, इत्तेक छी हम लाचार देखै छी

हाय पैसा, हाय पैसा, सभ किछु अछि पैसे-पैसा किए ई
धर्म करू, कर्म करू, छोड़ू ई सभटा दुराचार देखै छी

आजुक कालमे व्याकुल उत्पल कहि रहल अछि
नीक काज नै करब, नाम पर होयत मूत्राचार देखै छी.
वर्ण-20

2

नेनामे जखन कानैत रही तों चुप हमरा कराबैत रही
हम नहि मानैत रही तँ तों प्रेमसँ हमरा खुआबैत रही

तोहर आँचर छल ई दुनिया नहि हम किछु जानैत रही
मन दब रहलापर हमरा लोरी गाबि कऽ सुताबैत रही

पहर धरि काज केलाके बाद तों दम साधिके सुतैत रही
हमर टुहैक कानब सँ भरि-भरि राति माय जागैत रही

लोकक उपराग सुनिके बादो नै कखनो तमसाबैत रही
अपना नहि पीबि के ओ दूध हमरा जरूर पियाबैत रही

जन्मैत संगे देखै छी मायके पहिने, ठाढ़ कियो ओतय रही
आंखिमे भरल नोरक संग उत्पलके देखि मुस्काबैत रही

सरल वार्णिक बहर वर्ण -23

अनिल मल्लिक
1
हे राम पुछैत छी अहाँसँ कहू किए दोष हमरा पर लादल गेल
जमीनमे समयलौं हम अपने की जीवीतेमे हमरा गाड़ल गेल

अहिल्या सुखी छलौं पाथर बनि कs ने बेदना ने कोनो संबेदना छल
उद्धार केलौं किए की अपमान सही कहाँ ओहि दुष्ट के मारल भेल

हे श्याम सुन्दर हे मुरलीधर कहू प्रीतमे हमर कोन खोट छलै
बिरह अग्निमे जरैत रहलौं हम किए प्रीत चितामे जारल गेल

हे कृष्ण कहैत छलौं सखी हमरा बहीनक हमरा सम्मान भेटल
नोर बनी बहल दर्द हमर जखन पाँच पतिसँ बिआहल गेल

हे बालकृष्ण अहि यशोदा के मातृत्वक बदला अहाँ किए अश्रु देलौं
गोकुल छोडि मथुरा गेलौं कहियो हाल पुछब से कहाँ आयल भेल

नारीपर अत्याचारक क्रम सुरुआत तहिएसँ भेल स्वीकार करु
नाक जे काटल सुर्पणखाकैँ कहू कोन न्याय सिद्धान्तक पालन भेल

इतिहास के अपन इच्छासँ सभ अपने तरहसँ लिखैत रहल
निधोक घुमैत अछि अन्यायी कहाँ समाजमे एहनकैँ बारल गेल
26 वर्ण

2

उठाऽक नजरि अहाँ जखन झुका लेलिऐ
लजाऽक पाएर अहाँ जखन नुका लेलिऐ

रुप देखि एहन सुधि हरयलहुँ हम
घर जायब कोना रस्ता हम भुला गेलिऐ

चान सन मुखडा केश कारी मेहऽक सन
घण्टी मंदिर के जेहन स्वर सुना देलिऐ

लगन जोर छल तैं संगम भेल अपन
गीत प्रीतऽक संग संग गुनगुना लेलिऐ

रचना सॉ अहाँऽक मोह एतेक हे ईश्वर
पुष्प प्रेमऽक की जरि जखन सुखा देलिऐ

पिआस बढिते छल की दैवऽक दोख देखू
लहास अपने कन्हा अपन उठा लेलिऐ

अछि बेटि मे सजल जे प्रतिरुप अखन
पूँजी नेहऽक ओकरे उपर लुटा देलिऐ

फेरो असगर छी आबि अहाँ यादि बहुत
बिदा बेटी के केलौं आत्मा हम जुरा लेलिऐ

गर्दा जमल फोटो देखैत जे नोर झरल
हवा तेज छल ओकरा हम उडा देलिऐ
वर्ण-16.